ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

याज्ञवल्क्य तथा उनकी कृतियाँ

अरूण कुमार चौधरी
संस्कृत विभाग, आर.बी.एस. महाविद्यालय, तियाई

प्रस्तावना :

सर्वविदित है कि स्मृतियाँ तो शताधिक हैं, किन्तु प्रमुख रूप से अष्टादश स्मृतियों में मनुस्मृति के पश्चात् याज्ञवल्क्यस्मृति का नाम बहुत ही गर्व के साथ लिया जाता है। यह स्मृति संस्कृत वाङ्मय के प्रायः सभी शाखाओं से सम्बद्ध है, खासकर उपनिषद् कालीन ऋषियों की चर्चा के प्रसङ्ग में इनका नाम सभी दृष्टि से अपनी प्रसिद्धि रखता है। पुराणों एवं स्मृतियों मं भी यह नाम बहुत ही सम्मान के साथ दृष्टिगत होते हैं। ये राजा जनक के समकालीन थे और उनके सभासदों में इनका नाम बहुत ही गर्व के साथ लिया जाता था। वे संस्कृतज्ञों के बीच अवाल वृद्ध के रूप में जाने जाते थे। शुक्लयजु संहिता का ज्ञान इन्होंने भगवान् सूर्य को पसन्न कर प्राप्त किया था, जिसका उल्लेख कन्व संहिता के सायण भास्य में देखने को मिलता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सम्प्रदायों की दृष्टि से श्रुति के दो सम्प्रदाय माने गये हैं- ब्रह्म सम्प्रदाय तथा आदित्य सम्प्रदाय। ब्रह्म सम्प्रदाय में कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध है एवं शुक्लयजुर्वेद आदित्य सम्प्रदाय से सम्बद्ध है। इन भेदों का स्वरूप उनके नामों के आधार पर पृथक्-पृथक् है। जिसके अनन्तर आचार्य याज्ञवल्क्य आदित्य सम्प्रदाय के पोषक माने जाते हैं । शुक्लयजुर्वेद में दर्शपौर्णमासादि आदि यागों के लिए आवश्यक मंत्रों का ही संकलन है। कृष्णयजर्वेद में मंत्रों सहित तन्नियोजक ब्राह्मणों का ही संमिश्रण है। इन मिश्रणों को लेकर कृष्णयजुर्वेद कहा जाता हैयह शाखा माध्यान्दिनीय शाखा के नाम से भी प्रसिद्ध है। याज्ञवल्क्य वाजसनेय एक अत्यन्त प्रौढ़ तत्त्वज्ञ थे और ये मिथिला के निवासी भी थे। श्रीधर शास्त्री ने इनका जन्मस्थल चमत्कारपुर अथवा बृद्धनगर जो आज के दिनों में 'बड़नगर' नाम से प्रसिद्ध है, माना है और कहा है कि बाल्यावस्था में ये बड़नगर में रहे होगें। तत्पश्चात् प्रौढ़ावस्था में ज्ञानी होकर राजा जनक के राजदरवार में गये होगें। शतपथ ब्रह्मण के आधार पर इन्होंने उदालक आरुणि से वेदान्त-विद्या का परिशीलन किया। आरुणि ने कहा है कि यदि वेदान्त की शक्ति से अभिमंत्रित जल से खुटे को भी सींचा जाय तो उसमें भी पत्तियाँ लग सकती हैं उनके इस कथन को अक्षरसः सत्य कर देने वाले याज्ञवल्क्य की चर्चा अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में जगह-जगह आयी है। इनकी दो पत्नियाँ थीं- मैत्रेयी एवं कात्यायनी। मैत्रेयी तो विदुषी थी और ब्रह्मवादिनी भी, पर कात्यायनी एक सामान्य बुद्धिमति महिला थी। इनकी भी चर्चा याज्ञवल्क्य के साथ अन्य ग्रन्थों में उपलब्ध होती है कि घर छोड़कर वन जाते समय याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को ब्रह्म- विद्या का उपदेश तथा कात्यायनी को भौतिक सम्पदायें प्रदान की थी। इनके पाणिडत्य, योगबल तथा दार्शनिकता आदि की चर्चा याज्ञवल्क्य के साथ अन्य ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं।

जहाँ तक याज्ञवल्क्य की बात है, उनकी कृतियाँ उपदेशों के रूप में उपनिषद्-साहित्य और वैदिक-साहित्य में भी उपलब्ध होते हैं। किन्तु मुख्य रूप से इनकी प्रकाशित कृतियों के रूप में याज्ञवल्क्यस्मृति विभिन्न व्याख्याकारों के द्वारा प्रकाशित होकर पाठकों के बीच उपलब्ध होते हैं। इसी प्रकार 'याज्ञवल्क्य शिक्षा' एवं 'याज्ञवल्क्य गीता' भी प्रकाशित एवं उपलब्ध है। इन ग्रन्थों में मानव-जीवन के व्यवहारिक पक्षों का तात्त्विक पाठ उद्धृत किये गये हैं, जो मिथिला के भू-भागों में क्रियान्वित तो हैं ही, विश्व पटल पर संस्कृतानुरागियों

के बीच भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह तो सर्वविदित है कि स्मृतियों के मध्य मौलिक स्मृति मनुस्मृति के त्वरित पश्चात् याज्ञवल्क्यस्मृति का ही स्थान आता है। इस सन्दर्भ में याज्ञवल्क्यस्मृति के निर्माण से सम्बन्धित यह भी उल्लेख है कि मनु, अत्रि एवं विष्णु आदि स्मृतियों के आधार पर ही याज्ञवल्क्यस्मृति की रचना आचार्य याज्ञवल्क्य ने की है, जिसके सन्दर्भ में ''मन्वात्रिविष्णुहारीत'' जैसे वाक्य का प्रयोग भी इसी कृति के लिए किया गया है। ऋषि ने अपनी स्मृति में सोमश्रवस जैसे अन्य ऋषियों के प्रश्न के आधार पर श्रुतिसत्रादि अनुमोदित धर्म-लक्षण और उसके विभाग, वर्णाश्रमधर्म, सामान्य जन का व्यवहार, राजधर्म, उत्तराधिकार, प्रजा-राजा का अधिकार एवं कर्त्तव्य अपराध, दण्ड, पाप तथा उसका प्रायश्चित इत्यादि जैसे प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन के सभी अंगों का सांगोपांग वर्णन अपने ग्रन्थ में किया है। जिसे तीन अध्यायों आचार, व्यवहार तथा प्रायश्चित में समाहित किया है।

टीकाओं की दृष्टि से याज्ञवल्क्यस्मृति से सम्बन्धित बहुत सारी टीकाएँ उपलब्ध होती हैं, किन्तु प्रसिद्ध टीकाओं में विश्वरूप, वालम्भट्टी एवं अपरार टीकाएँ है। फिर भी इन सब में उत्कृष्ट टीका मीताक्षरा ही प्रसिद्ध एवं प्रचलित देखा जाता है। इस टीका के रचयिता पंडित विज्ञानेश्वर थे जो प्रसिद्ध विद्वानों में आते हैं और ये दक्षिण देश काल्याणपुर नामक राज्य में सम्भवतः 12 वीं शताब्दी में हुए थे और विक्रमादित्य नामक राजा के समय में सभा पण्डित के रूप में इनका नाम आता है, क्योंकि इस टीका के अन्तिम श्लोक में ऐसा देखने को मिलता है। याज्ञवल्क्यस्मृति पर बहुत सारे शोध-कार्य एवं लेखन-कार्य हो चुके हैं। किन्तु इसकी सांगोपांग व्याख्या कहीं भी देखने को नहीं मिलती है। ऐसा देखने को मिलता है कि यह स्मृति अपने श्लोकों के शब्दार्थों से ही युक्त है। वैसे तो इन दिनों श्लोकों की व्याख्या के साथ वृहत् शोध-प्रबन्ध एवं ग्रन्थादि प्रकाशित हुए हैं और इसका लाभ जनसाधारण को प्राप्त हो रहा है, किन्तु इसके लिए और भी परिश्रम की आवश्यकता जान पड़ती है ।

100 ई. पूर्व से 300 ई. सन याज्ञवल्क्यस्मृति का समय निर्धारित है, और तीन अध्यायों में वर्णित यह स्मृति बिल्कुल सुव्यवस्थित एवं 1012 श्लोकों में वर्णित है। जहाँ तक इनके सारतत्त्वों की बात है, उनमें ऐसा देखा जाता है कि याज्ञवल्क्य ने वैशम्पायन ऋषि से वापस ली गई, वेदों की शिक्षा के बाद उस ज्ञान को उगलकर सूर्योपासनोपरान्त ज्ञान प्राप्त किया, जिसके तेज से उन्होंने जो लिखा उनमें तेजस्विता के आधार पर स्मृति, अराण्यक एवं योगशास्त्र के लिए भी याज्ञवल्क्यस्मृति की प्रसिद्धि सामने देखने को मिलती है। ऐसा भी देखने को मिलता है कि याज्ञवल्क्य ने अपने शिष्यों के द्वारा धर्म की शिक्षा के आधार पर याज्ञवल्क्यस्मृति का प्रणयन किया है, जिसका समर्थन मिताक्षरा करती है। धर्मशास्त्र को संक्षिप्त कर याज्ञवल्क्य के शिष्यों ने उसको निवद्ध किया है, वही साक्ष्यों के आधार पर वैदिक ऋचाओं के दृष्टा याज्ञवल्क्य को ही इस स्मृति का रचियता भूल कही जाएगी, ऐसा भी वर्णन आया है। बहुत लोगों का मानना है कि ऋषि मनु के पश्चात् याज्ञवल्क्य हुए, जो अनेक धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के ज्ञाता होकर इसका प्रणय किया होगा। मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, उष्ण, अंगिरा, यम, आपस्तम्भ, सोमवर्त्त, कात्यायण, वृहस्पति, परासर, व्यास, शंखलिखित, दक्ष, गौतम, सातातप तथा वशिष्ट धर्मशास्त्र क उदभट्ट विद्वान् माने गये हैं, जिनसे याज्ञवल्क्य पूर्णतः भिज्ञ थे। इस स्मृति में पुराणादि से सम्बद्ध प्रकरण भी देखी जाती है, जिनमें अग्निपुराण, गरूड़पुराण आदि उल्लेखनीय हैं। गरूड़पुराण ने तो याज्ञवल्क्यस्मृति का नाम लिये बिना रह न सका, लेकिन अग्निपुराण में इसकी चर्चा नहीं आयी है। फिर भी इसके भाव प्रलक्षित होते हैं। शंख एवं लिखित ने तो इस ग्रन्थ का नाम लिया है और याज्ञवल्क्य ने उन्हें धर्मशास्त्रों का प्रणेता भी माना है। ऐसे ग्रन्थ रहे होगे किन्तु वे सम्प्रति अप्राप्त है। डॉ काणे का कहना है कि मनुस्मृति क कई श्लोक याज्ञवल्क्यस्मृति से मेल खाते हैं। बात पृथक् है कि इस स्मृति की बहुत बातों को याज्ञवल्क्य नहीं मानते। फिर भी जगह-जगह मनुस्मृति की पुनरावृत्ति याज्ञवल्क्यस्मृति में देखी जाती है। फलतः मनुस्मृति के त्वरित पश्चात ही यह स्मृति जगजाहिर हुई। इस स्मृति में विष्णु धर्मसूत्र के भी कुछ नियमों का पालन किया गया है, जिसकी चर्चा स्पष्ट रूप से देखने को नहीं मिलती है, किन्तु इसके भाव स्पष्ट रूप से मिलते हैं। कौटिल्य अर्थशास्त्र, मानव गृह्यसूत्र, पारस्करगृह्यसूत्र तथा कात्यायण श्राध्यकल्प से भी याज्ञवल्क्यस्मृति प्रभावित दिखती है। अनुमानतः ऐसा लगता है कि चतुर्दश विद्याओं के अध्ययनोपरान्त ही इस ग्रन्थ की रचना की गई हो। इसके टीकाकर विश्वरूप जिनका काल 9 वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है, जिसकी चर्चा चूँकि इस ग्रन्थ में उपलब्ध होती है और 8 वीं शताब्दी के शंकराचार्य ने भी इस ग्रन्थ की चर्चा की है।[२] प्रतिपाद विषयों से यह स्पष्ट होता है कि यह ग्रन्थ 100 वर्ष पूर्व तथा ईसा के 200 वर्ष बाद के अनन्तर ही निर्मित हुआ होगा। याज्ञवल्क्यस्मृति नाम से अन्य कृतियों के अनन्तर बृद्धयाज्ञवल्क्य, योगयाज्ञवल्क्य तथा वृहदयाज्ञवल्क्य भी पूर्व में हो चुके हैं। ऐसा उद्धरण आता है। टीकाकारों ने अपने-अपने लेखनकाल में स्पष्ट किया है कि योग याज्ञवल्क्य में 12 अध्याय एवं 495 श्लाक हैं, जिसकी हस्तलिपि डेकान कॉलेज में उपलब्ध हैं। योगशास्त्र के ब्रह्मा से ज्ञानोपरान्त उन्होंने यह विद्या गार्गी को दिया था, जिसे विश्वरूप ज्ञानेश्वर अपरार्क ने वृद्ध याज्ञवल्क्य के साथ जोड़कर उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया है। जितेन्द्रीय ने भी वृद्ध याज्ञवल्क्य की चर्चा की है। यह बात पृथक् है कि ये ग्रन्थ धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ के रूप में नहीं लिये जाते हैं, किंतु उदाहरण के रूप में इनका नाम लेना विधिसंगत जान पड़ता है। प्रसिद्ध टीकाकारों में विश्वरूप ज्ञानेश्वर, अपरार्क तथा शूलपाणि भी माने जाते है। वैसे

अन्यान्य लोगों ने भी इनके टीकाओं को प्रशंसा की हैं। प्राचीन टीकाकारों में पराशर का नाम भी लिया जाता है। 'कलौ पराशरीस्मृता' शब्द के पक्षधर याज्ञवल्क्य भी थे। अन्य स्मृतियों में याज्ञवल्क्यस्मृति के भावों एवं नियमों का उल्लेख देखने को मिलता है। यह बात पृथक् है कि किसी भी समतुल्य ग्रन्थ की रचना यदि परवर्ती होती है, तो स्वभाविक रूप से पूर्ववर्ती समतुल्य ग्रन्थों के भाव उन ग्रन्थों में आना स्वाभाविक है। यह तो विदित है कि याज्ञवल्क्यस्मृति मनुस्मृति के त्वरित पश्चात् की है। सभी स्मृतियाँ धर्मस्वरूप जब हमारे सामने उपलब्ध होती है, तो ऐसा अनुभव होता है कि यह मानव-जीवन के उद्धार हेतु एवं व्यवहार को परिमार्जित रूप से रखने हेतु ही निर्मित हुई होगी, क्योंकि धर्मशास्त्र का दूसरा नाम ही व्यवहार शास्त्र कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जीवन के हर क्षण में उठते, बैठते, सोते, जागते और किसी भी क्रिया के अनन्तर धर्म ही प्रधान होता है। चूँकि धर्म क्रिया-बोधक तत्त्व है और कर्म के बिना धर्म अस्तित्व विहिन होता है। स्मृतियाँ धर्म की वह कुण्डली है, जिसके अनन्तर मानव-जीवन के अनेक व्यवहारों की चर्चा वर्णित है जो विभिन्न स्मृतियों को देखने से अवगत होता है। इसी प्रकार मिथिला के धर्म समाज में चूँकि याज्ञवल्क्य मिथिला के योगेश्वर के रूप में प्रतिष्ठित थे और राजा जनक पण्डित सभा के सभासद् भी थे। ऐसी स्थिति में दिशा, काल एवं क्षेत्र को देखते हुए मिथिला के भू-भाग में अवस्थित जन साधारण को, अपनी स्मृति के माध्यम से व्यवहार को प्रचलित करने हतु अपनी अनुशंसाओं से उन्हें अवगत कराया है। याज्ञवल्क्य शिक्षा के माध्यम से आचरण एवं याज्ञवल्क्यस्मृति के माध्यम से लोक- व्यवहार का उपदेश प्रस्तुत किया है। विभिन्न हिन्दी टीकाओं एवं अंग्रेजी टीकाओं के द्वारा इसके महत्त्व और भी उजागार हो रहे हैं और होते रहेंगे। आज के युग में भी इस स्मृति की प्रासंगिकता मिथिला के समाज में ही नहीं, अन्य समाजों में भी आंशिक ही नहीं पूर्ण रूप से देखने को मिलता है। आचार, विचार, व्यवहार एवं प्रायश्चित के सदय: उदाहरण हमारे मिथिला का सर्वश्रेष्ठ साधन है, जहाँ अभी भी संध्यावदन, विभिन्न प्रकार के संस्कारों में याज्ञवल्क्यस्मृति की छाप देखने को मिलती है। हमारे जीवन का आधार धर्म स्मृतियाँ ही हैं, जिनका विभिन्न रूपों में खण्डित कर भी हम अपने लोक-जीवन में अपनाकर अपने को धन्य समझते हैं।

संदर्भ :

1. ज्ञयं चारणयकमहं चदादित्यावदाप्रवान्।
योगशास्त्रं च मत्प्रोक्तं ज्ञेयं योगमभीप्सता।। याज्ञवल्क्यस्मृति, 3/110
2.ब्रह्मसूत्रभाष्य में याज्ञवल्क्यस्मृति के श्लोक, 3/226 का भावार्थ वर्णित है।
3.मनुस्मृति, 2/10
4.मनुस्मृति, 2/13